Himalayan Journal Social Sciences & Humanities
(A Peer Reviewed Journal of Society for Himalayan Action Research and Development)
ISSN: 0975-9891

युवाओं के भविष्य निर्माण में परामर्श एवं निर्देशन का महत्व

कुसुम डोबरियाल
संस्कृत विभाग, हे0न0ब0 गढ़वाल विश्वविद्यालय परिसर,पौडी गढ़वाल–246001

Manuscript Info

Manuscript History

Received : 10.09.2016
Revised : 19.09.2016
Accepted : 21.10.2016

सारांश

राष्ट्र निर्माण मे युवाओं की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी जाती है भारत दुनिया में अग्रणी राष्ट्र है जहां युवाओं की संख्या सर्वाधिक है, वर्तमान मे भारत की दृष्टि से यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि इस विशाल युवा शक्ति का उपयोग राष्ट्र निर्माण में किया जा सके। युवाओं को सद्चरित्र एवं संस्कारवान बनाने में माता–पिता एवं शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है। प्रस्तुत शोध पत्र में युवाओं के भविष्य निर्माण में परामर्श एवं निर्देशन के महत्व पर संक्षिप्त विमर्श प्रस्तुत किया गया है।

कुंजी शब्द–
युवा, भविष्य निर्माण परामर्श, निर्देशन

राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका महत्वपूर्ण मानी जाती है क्योंकि राष्ट्र की दशा, दिशा, भविष्य तथा विकास इन्हीं के द्वारा निर्धारित किया जाना है। माना जाता है कि इनकी अक्षुण्ण ऊर्जा यदि गलत हाथों में जाकर विनाशक प्रवृति की ओर बढ़े तो समाज व राष्ट्र का पतन निश्चित है। अतः निर्देशन एवं उचित परमामर्श दिया जाना न केवल युवाओं के भविष्य निर्माण में सहायक है अपितु राष्ट्र के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

निर्देशन एवं परामर्श युवाओं के लिए त्रिस्तरीय रूप से कार्य करते हैं[1]– समाधानिक, अनुकूलन एवं परिवर्धन। निर्देशन एवं परामर्श के माध्यम से युवा तात्कालिक परिस्थिति में अपनी समस्या का सर्वोचित समाधान कर सकता है। इस क्षमता का विकास परामर्श के समाधानिक स्वरूप को इंगित करता है।

जब परामर्श अथवा निर्देशन के माध्यम से युवा अपने चरित्र निर्माण, शैक्षिक योजना अथवा दीर्घकालिक व्यक्तिगत उद्देश्यों की पूर्ति हेतु दिशा प्राप्त करते है अथवा प्रेरणा प्राप्त करते है तब इसे अनुकूलन की संज्ञा दी जाती है। परिवर्धन, परामर्श की एक ऐसी विधा है जिसके माध्यम से युवाओं में भविष्य में आने वाली समस्याओं के लिए स्वयं को तैयार करने की क्षमता पैदा हो जाती है। अतः आत्मज्ञान एवं आत्मबोध की प्राप्ति होती है।

युवाओं को परामर्श की आवश्यकता क्यों पड़ती है? इस विषय पर विभिन्न मनौवैज्ञानिक शोध कुछ विशिष्ट बिन्दुओं की ओर इंगित करते है।सामान्यतः युवा वर्ग अपनी व्यक्तिगत, शैक्षणिक अथवा व्यावसायिक समस्याओं की विवेचना हेतु उपयुक्त माध्यम अथवा वातावरण नहीं पा सकते तथा न ही उनके अन्दर इन समस्याओं की प्रकृति को पहचानने अथवा समाधान पाने की क्षमता होती है। यहां तक कि अपने माता–पिता,सम्बधी अथवा मित्रों के साथ भी इन विषयों का आदान–प्रदान करने में उन्हें हिचकिचाहट अथवा हीन भावना का अहसास होता है। ऐसी परिस्थिति में शिक्षक एक योग्य परामर्शदाता अथवा शुभचिन्तक होने के नाते युवाओं की सहायता कर सकता है। कुशल परामर्शदाता के अन्दर वो सभी गुण होते है जिससे वह युवा छात्र/छात्रा की समस्या की वास्तविक स्थिति और

© SHARAD

कारणों को पहचान सकता है साथ ही समस्या के निदान हेतु सरल उपाय बता सकता है जिससे युवक स्वाभाविक रूप से उनका अनुसरण कर आत्मविश्वास प्राप्त कर सकता है। उसके अन्दर एक विश्वास पैदा होता है कि परामर्शदाता उसकी सहायता करने के साथ साथ गोपनीयता भी बनाये रखेगा।

शैक्षणिक एवं व्यावसायिक समस्यायें सामान्यतः अधिकतर युवाओं के साथ होती है इसका कारण जानकारी का अभाव अथवा परिवेश में किसी के न होने के कारण होता है। अध्ययन के समय उचित विषयों का चयन,समुचित पाठ्य सामग्री की उपलब्धता, परीक्षा की प्रकृति के अनुरूप विषय वस्तु का चयन आदि विषयों पर युवा असंमजस में रहता है। कौन सा विषय,कौन सा क्षेत्र उसकी क्षमता अथवा व्यक्तित्व के अनुरूप है यह तय कर पाना मुश्किल होता है। ऐसी परिस्थिति में एक कुशल मार्गदर्शक छात्र के मानसिक स्तर,स्वाभाविक स्तर, विलक्षणता, तर्कशीलता अथवा अभिरूचि के आधार पर उचित सुझाव दे सकता है। साथ ही यह भी महत्वपूर्ण है कि छात्र–छात्रा अपने अध्ययन के दौरान उचित विषय सन्धि (Subject Combination) का भी चयन करे। व्यावसायिक समस्यायें अधिकतर कार्यक्षेत्र से सम्बन्धित होती है जो व्यावसायिक जानकारी की सम्पूर्णता न होने अथवा मनौवैज्ञानिक कारणों से हो सकती है। अपने कार्यक्षेत्र की जानकारी प्राप्त करने में किसी अनुभवी परामर्शदाता का सुझाव मिलना आपकी समस्या का समाधान कर सकता है। सहयोगियों के साथ सकारात्मक एंव सहयोगात्मक व्यवहार कार्यशैली में सरलता एवं सुलभता प्रदान करता है।

सरला गुप्ता (2007)[2] ने अपने अन्वेषणात्मक लेख में अभिव्यक्त किया है कि सामूहिक परामर्श (Group Counseling) किशोरावस्था में अधिक प्रभावशाली है। इसके माध्यम से एक परामर्शदाता किशोरावस्था की मनौवैज्ञानिकता, जिज्ञासा तथा सभी सम्भावित समस्याओं की ओर युवावों का ध्यान आकष्ट करता है।तत्पश्चात किशोर अपनी जिज्ञासा तथा समस्या का आंकलन करते हुए स्वयं समाधान तलाशने का प्रयास करता है। उम्र के मध्यस्थ परामर्श की यह विधि अधिक व्यावहारिक प्रतीत होती है।

बीसी पाण्डे (2007)[3] ने अपने सम्पादन में अभिव्यक्ति दी है कि निर्देशन एवं परामर्शदाता यदि सूचना एवं प्रसारण विषयक आधुनिक तकनीकी का प्रयोग करें तो युवाओं को और अधिक लाभ मिल सकता है। प्रो रमेष चन्द्र[4] ने अपनी पुस्तक में महिलाओं की कैरियर काउंसिलिंग के विशय में चिन्ता व्यक्त की है कि पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं तथा सांस्कृतिक अल्पसंख्यकों को पर्याप्त परामर्श नहीं मिल सका। स्वस्थ समाज के निर्माण में महिलाओं को भी समानान्तर परामर्ष दिया जाना चाहिए।

निश्कर्षतः यह कहना समुचित होगा कि शिक्षण संस्थाओं में प्रत्येक शिक्षक एक परामर्शदाता अथवा निर्देशक की भूमिका अदा कर सकता है। क्योंकि पठन–पाठन के साथ–साथ छात्र–छात्राओं का व्यक्तित्व विकास भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। शिक्षण संस्थाओं की जिम्मेदारी मात्र डिग्री धारी युवक, युवतियां ही नहीं अपितु एक सुंसंस्कारिक युवा पीढ़ी भी समाज को प्रदान करना है जिससे सम्पूर्ण समाज एंव राष्ट्र भी लाभान्वित हो सके।

सन्दर्भित ग्रन्थः

1. ए0के0 नायक (2007) गाइडेन्स एण्ड काउन्सिलिंग,ए0पी0 एच पब्लिषिंग कार्पोरेशन, दरयागंज नई दिल्ली,पृ 4–5
2. सरला गुप्ता (2007) : कैरियर एण्ड काउन्सिलिंग एजुकेशन, नई दिल्ली पृ 73–147
3. बी0सी0 पाण्डे (2007) : इस्यूज एण्ड ट्रेण्ड्स इन वोकेशनल गाइडेन्स,ईशा बुक्स, नई दिल्ली, पृ0117 –123
4. प्रो0 रमेश चन्द्र (2007) : गाइडेन्स एण्ड काउंसिलिंग। कल्याण पब्लिकेशन। नई दिल्ली पृ 156–160

****

© SHARAD